भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 821
27/07/2023 को उत्तर दिए जाने के लिए

मौसम पूर्वानुमान और आपदा प्रबंधन में निजी क्षेत्र की भागीदारी

821 श्री मुकुल बालकृष्ण वासनिक:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार की विशेष रूप से मौसम पूर्वानुमान और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में अपनी पहुंच और इस क्षेत्र में प्रदान की जाने वाली अपनी सेवाओं की क्षमता को बढ़ाने के लिए निजी क्षेत्र के साथ मिलकर काम करने की योजना हैं;
(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
(ग) क्या सरकार ने अपनी प्रमुख योजनाओं के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण उपकरणों का घरेलू स्तर पर विनिर्माण करने की संभावना का पता लगाया हे ताकि आयात पर लगने वाले समय, लागत और निर्भरता को कम किया जा सके; और
(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(श्री किरेन रिजिजू)

(क) जी हां।

(ख) भारत मौसम विज्ञान विभाग ने RA II क्षेत्र में चक्रवात संबंधी परामर्शिकाएं जारी करने, तथा स्थान विशिष्ट वर्षा के पूर्वानुमान हेतु तत्काल पूर्वानुमान तकनीकी विकसित करने के लिए सितंबर 2021 में गूगल एशिया प्राइवेट लिमिटेड के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

उपर्युक्त के अतिरिक्त,

- कृषि सेवाओं से संबंधित पूर्वानुमान एवं चेतावनी संदेश भेजने के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग में एक सरकारी निजी भागीदारी की गई है।
- स्वदेशी रडार विकसित करने के लिए, विभाग ने प्राइवेट सेक्टर से सहायता ली है।
- गर्ज के साथ तूफान और बिजली गिरने संबंधी मौसम सेवाओं के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग क्लाइमेट रिसाइलियेंट ऑब्जर्विंग सिस्टम प्रमोशन काउंसिल (CROPC) के साथ मिलकर काम कर रहा है।
- मौसम विज्ञान संबंधी विभिन्न एप्लिकेशन एवं सेवाओं के विकास में सहायता प्रदान करने के लिए भारतीय स्टार्टअप्स से प्रस्ताव आमंत्रित किये गये हैं।

(ग) जी हां।

(घ) राष्ट्रीय समुद्र प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT) से हस्तांतरित प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हुए "बैरोमीट्रिक प्रेशर सेंसर और इनसैट कम्युनिकेशन युक्त सैटेलाइट ट्रैक्ड लैगरांगियन ड्रिफ्टर" को अब अपने देश में ही बनाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केन्द्र (इंकॉइस) आवश्यकतानुसार खरीदारी हेतु खरीद इकाई है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने पुराने ऑप्टिकल ओडोलाइट-आधारित पायलट बैलून सिस्टम को बदल उसके स्थान पर नवीनतम जीपीएस-आधारित पायलटसोंड सिस्टम प्रयोग करने की संभावना तलाशी है, ताकि बेहतर सटीकता के साथ अपर एयर विंड डेटा प्राप्त किया जा सके। इस प्रौद्योगिकी में डेटा के नुकसान को कम करने तथा मौसम पूर्वानुमान सेवाओं में और अधिक सुधार करने की क्षमता है। इसके अतिरिक्त, बहुत से प्रेक्षण उपकरण (जैसे कि डॉपलर मौसम रडार, स्वचालित वर्षा मापी आदि) जो देश में ही बनाये जाते हैं, भारत सरकार की मेक इन इंडिया नीति का समर्थन करने के लिए आवश्यकता के अनुसार खरीदे जाते हैं।

*****